**В известной книге Ихья улюм ад-дин с цепочкой от Пророка ( с.а.в) приводится хадис о поклонени**
04.03.2020 21:56

---

Каждый, кто соблюдает пост в первый четверг месяца раджаб, затем совершает между вечерней и ночной обязательными молитвами дополнительную молитву из 12 ракаатов, разделяя каждые 2 ракаата таслимом и читая в каждом ракаате суру Фатиха 1 раз аль-Кадр 3 раза и аль- Ихляс 12 раз, потом после молитвы 70 раз прочитает салават АЛЛАХУММА САЛЛИ АЛЯ МУХАММАДИН НАБИЙЙТЛЬ-УММИЙИ ВА АЛЯ ЭЛИХИ Зат ем совершит суджуд земной поклон и находясь в нём 70 раз скажет: СУББУХУН КУДДУС РАББУЛЬ-МЭЛЭИКАТИ ВАР-РУХ.

Затем подымет голову и 70 раз скажет: РАББИГФИР ВАРХАМ...

потом совершит второй земной поклон и скажет тоже самое что и в первом, а за темпопросит об удовлетворении своей нужды, то его просьба будет выполнена.

Любому кто совершит эту молитву, Всевышний простит его пригрешения даже если они будут как пена морская, как кол-во песчиное, тяжелы как горы, и многочисленны как листья деревьев, а в Судный день Аллах примет его заступничество за 700 своих родственников, заслуживших адский огонь."

И как пишет Газзали ( р.а.): "Я видел всех жителей Иерусалима проявляющие постоянство в её отправлении и не позволяющиии себе пренебреч ее исполнением."

ما أورده الغزالي ( المتوفى سنة 505 هـ ) في كتابه المعروف ( إحياء علوم الدين ) حيث قال : " أما صلاة رجب فقد روي بإسناد

عن رسول الله ( صلَّى الله عليه وآله ) أنه قال : " ما من أحد يصوم أول خميس من رجب ثم يصلّي فيما بين العشاء والعتمة اثنتي عشرة ركعة، يفصل بين كل ركعتين بتسليمة يقرأ في كل ركعة بفاتحة الكتاب مرة و { إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ } ثلاث مرات و { قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ } اثنتي عشرة مرّة، فإذا فرغ من صلاته صلّى عليّ سبعين مرة يقول : اللهم صل على محمد النبي الأمي وعلى آله، ثم يسجد ويقول في سجوده سبعين مرة : سبوح قدوس رب الملائكة والروح، ثم يرفع رأسه ويقول سبعين مرة : رب اغفر وارحم وتجاوز عما تعلم إنك أنت الأعز الأكرم، ثم يسجد سجدة أخرى ويقول فيها مثل ما قال في السجدة الأولى، ثم يسأل حاجته في سجوده فإنها تقضى، قال رسول الله ( صلَّى الله عليه وآله ) لا يصلي أحد هذه الصلاة إلا غفر الله تعالى له جميع ذنوبه ولو كانت مثل زبد البحر وعدد الرمل ووزن الجبال وورق الأشجار، ويشفع يوم القيامة في سبعمائة من أهل بيته ممن قد استوجب النار . فهذه صلاة مستحبة، وإنما أوردناها في هذا القسم لأنها تتكرر بتكرر السنين وإن كانت رتبتها لا تبلغ رتبة التراويح وصلاة العيد؛ لأن هذه الصلاة نقلها الآحاد، ولكني رأيتُ أهل القدس بأجمعهم يواظبون عليها ولا يسمحون بتركها فأحببت إيرادها "

*Rashid Yakubov maktab-penza*

1 / 1